विचार बिन्दु

केवल प्रकाश का अभाव ही अंधकार नहीं, प्रकाश की अति भी मनुष्य की आँखों के लिए अंधकार है। –स्वामी रामतीर्थ

यह मानना कि हमारी मान्यता गलत हो सकती है!

किसी ने यदि बौद्धिक विनम्रता के बारे में कभी नहीं सुना है, तो वह अकेला नहीं हैं। इस विषय पर पश्चिम में अकादमिक शोध हो रहे हैं। बौद्धिक विनम्रता का अर्थ यह स्वीकार करना है कि हमारी मान्यता गलत हो सकती है। यह विनम्रता हमें खुले दिमाग से सच्चाई को सुनने और उस पर ध्यानपूर्वक विचार करने के लिये तैयार करती है। वर्तमान भारतीय राजनीतिक कोलाहल में यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसका यहां भी विमर्श आवश्यक है। हालांकि भारतीय परंपरा में पुरातन काल से बौद्धिक विनम्रता की अवधारणा मिलती है। भारतीय वेदों और पुराणों के आख्यान इसकी गवाही देते हैं। विश्व की अन्य दार्शनिक परंपराओं में भी बौद्धिक गुणों की बात की गई है। पिछले दो दशकों में मानव के व्यवहार का अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिकों और समाजिक वैज्ञानिकों ने इस विषय पर शोध भी किए हैं। एक वाक्य में कहें तो, बौद्धिक विनम्रता यह पहचानना भर है कि जिस चीज़ पर हम विश्वास करते हैं, वह वास्तव में गलत हो सकती है। हालांकि किसी को अपना विश्वास गलत नहीं लगता है। कोई उन चीजों पर क्यों कर विश्वास करेगा जो गलत लगती हैं। लेकिन बौद्धिक रूप से विनम्र व्यक्ति यह पहचानता है कि जिन चीजों पर वह जबरदस्त विश्वास करता है उनमें से कई चीजें वास्तव में गलत हो सकती हैं। दार्शनिक लोग लंबे समय से इसे एक बौद्धिक गुण के रूप में बताते आए हैं, ताकि लोग इस संभावना को पहचान सकें कि वे चीजों के बारे में गलत हो सकते हैं। हाल ही में हुए अनेक अध्ययन बताते हैं कि अधिकांश लोग अपने आप में जितना होना चाहिए उससे कहीं अधिक आश्वस्त होते हैं। वे यह विश्वास करते हुए जीवन जीते हैं कि वे सत्य के पक्ष में हैं। अमरीकी अध्ययनकर्ताओं ने लगभग दस साल पहले यह सवाल पूछना शुरू किया कि अगर हम लोगों को बौद्धिक रूप से थोड़ा और विनम्र बना सकें तो इसका क्या मतलब होगा? यदि हम लोगों को यह एहसास दिलाएं कि उनका विश्वास और दृष्टिकोण कभी-कभी गलत भी हो सकता है, तो क्या इससे उनके निर्णयों में सुधार होगा और क्या वे अन्य लोगों के साथ असहमति और संघर्ष से निपट पाएंगे? भारतीय राजनीति ही नहीं समूची मानव सभ्यता आज जिस मुक़ाम पर है वहां वास्तव में आवश्यकता इस बात की है कि लोगों को उनके विचारों की सटीकता में अधिक यथार्थवादी बनाने के लिए तैयार किया जाय। अकादमिक अध्येता इस सवाल का जवाब खोज रहे हैं कि क्या बौद्धिक विनम्रता एक ऐसा तरीका है जिसे विकसित किया जा सकता हैं? या क्या यह मानव व्यक्तित्व की एक विशेषता है जो कुछ लोगों में होती है और कुछ लोगों में नहीं होती? मनोविज्ञान के अध्येता मानते आये हैं कि लोग निश्चित रूप से बौद्धिक रूप से विनम्र होने के स्तरों में एक समान नहीं होते, उनमें भिन्नता होती है। लोगों की अनिश्चितता के प्रति सहनशीलता के बारे में सोचें तो बौद्धिक रूप से विनम्र होना और यह स्वीकार करना कठिन होता है कि यदि हम हर समय निश्चितता चाहेंगे तो चीजों को नहीं जान पाएंगे। किसी का पालन-पोषण कैसे हुआ है इसका भी इस बात से बहुत लेना-देना होता है। हमें यह प्रवत्ति कहां से मिली? हम जो जानते हैं वह जानकारी कहां से आई है? यह एक व्यक्तित्व विशेषता है, लेकिन मन की एक स्थिति भी है जो कभी-कभी उभरती है। क्या हम इसे साध सकते हैं? यह वह बडा सवाल है जिस पर अभी पश्चिम में लोग अध्ययन कर रहे हैं और यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि क्या लोगों को बौद्धिक रूप से अधिक विनम्र बनाने के तरीके विकसित किए जा सकते हैं?

वे पैरामीटर क्या हैं या ऐसी चीजें क्या हैं जो यह निर्धारित करने में मदद करती हैं कि कोई व्यक्ति बौद्धिक रूप से विनम्र होगा या नहीं होगा? इस सवाल के उत्तर खोजने के लिये विशेषज्ञों ने व्यक्तित्व की विशेषताओं पर अध्ययन किया है। उदाहरण के लिए, उन्हें यह जानकारी है कि जो लोग सोचने में बडा आनंद लेते हैं उनमें बौद्धिक विनम्रता अधिक होती है। जो लोग अधिक सोचना पसंद करते हैं, उन्हें बौद्धिक खेल खेलना पसंद होता है। वे उन मुद्दों पर विचार करना पसंद करते हैं जिनका कोई उत्तर नहीं होता। मगर दूसरी तरह के लोग तब तक सोचना पसंद नहीं करते जब तक उन्हें वास्तव में ऐसा न करना पडे। इसलिए माना जाता है कि जितना अधिक कोई सोचने का आनंद लेता है, उतनी ही अधिक संभावना है कि वह बौद्धिक रूप से विनम्र होगा। दूसरी बात है, अस्पष्टता या अनिश्चितता के प्रति सहिष्णुता। हममें से किसी को भी अनिश्चितता पसंद नहीं है। और यदि हम अनिश्चितता को बेहतर ढंग से सहन कर सकते हैं, तो हमारे लिये बौद्धिक रूप से विनम्र होना आसान हो जाता है क्योंकि हम अपनी मान्यताओं पर कायम रहते हुए खुद से कह सकते हैं, कि हां ठीक है, लेकिन मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो सकता कि मैं इस बारे में सही हूं। कई अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि अपने विश्वास में निश्चित होने के मामले में पुरुष महिलाओं की तुलना में बौद्धिक रूप से थोड़े कम विनम्र होते हैं। एक अप्रकाशित अध्ययन बताता है कि बौद्धिक विनम्रता पर शिक्षा का जरूर असर पडता है। जितनी अधिक गुणवत्ता वाली स्कूली शिक्षा कोई प्राप्त करता है, वह बौद्धिक रूप से उतना ही अधिक विनम्र होता हैं, इस अर्थ में कि वह उन सभी सूचनाओं को पहचानना शुरू कर देता है जिनके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं होती। हालांकि स्कूली शिक्षा सामान्यत: बौद्धिक विनम्रता को बढ़ाती है किन्तु वह उन क्षेत्रों में बौद्धिक विनम्रता को कम भी कर देती है जिनमें हम विशेषज्ञता हासिल करते हैं। सामान्यजन की तुलना में एक विशेषज्ञ अपने विश्वासों के बारे में अधिक आश्वस्त होता है। इसलिए विशेषज्ञता और विशिष्टता के क्षेत्रों की बात आती है तो वहां बौद्धिक विनम्रता कम हो जाती है। अध्येता मानते हैं कि बौद्धिक विनम्रता विकसित की जा सकती है। इसके लिये बस यह पहचानना होता है कि मैं गलत हो सकता हूं। जब हम महसूस करने लगते हैं कि हम सभी में यह प्रवृत्ति होती है कि हम कितने सही हैं, इसे बढ़ा-चढ़ाकर आंकते हैं, तो हम अपने आप को जांचने की कोशिश करना शुरू करने लगते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम बस झुक जाएं और कहें, ''ठीक है, मैं हार मान लेता हूं, मैं गलत हूं।'' वास्तव में इसका मतलब यह है कि हम अपनी मान्यताओं पर थोड़ा कम आत्मविश्वास से रखें और अधिक कारणों की तलाश करें।

अध्येता मानते हैं कि बौद्धिक विनम्रता विकसित की जा सकती है। इसके लिये बस यह पहचानना होता है कि मैं गलत हो सकता हूं। जब हम महसूस करने लगते हैं कि हम सभी में यह प्रवृत्ति होती है कि हम कितने सही हैं, इसे बढ़ा-चढ़ाकर आंकते हैं, तो हम अपने आप को जांचने की कोशिश करना शुरू करने लगते हैं।

अध्येताओं की राय है कि रोल मॉडलिंग के माध्यम से भी लोगों में बौद्धिक विनम्रता बढ़ाई जा सकती है। जैसे स्कूल की कक्षाओं में, शिक्षकों का छात्रों के प्रश्न पूछने पर खुले तौर पर स्वीकार करना कि, 'मैं नहीं जानता।' या यह उत्तर देना कि, ''मैं इस बारे में गलत हो सकता हूं। मैंने वास्तव में इस पर गहराई से ध्यान नहीं दिया है। बौद्धिक विनम्रता वास्तव में कमजोरी की बजाय परिपक्वता और बुद्धिमत्ता की निशानी है। खुली मानसिकता और बौद्धिक विनम्रता में निकटता का संबंध होता है। बौद्धिक विनम्रता में हमारे पास पहले से मौजूद विश्वास और इस संभावना को शामिल करना शामिल है कि हम गलत हो सकते हैं। दूसरी तरफ हम उन चीज़ों के बारे में खुले विचारों वाले हो सकते हैं जिनके बारे में हमने पहले कभी नहीं सोचा था, और उसे पहली बार सुन रहे होते हैं और उसे स्वीकार करने को तैयार हैं। मगर इसमें कोई विनम्रता नहीं है क्योंकि ऐसा नहीं है कि आप किसी अन्य तरीके से विश्वास कर रहे थे कि आप इसके बारे में सही थे, और अब आप इस संभावना पर विचार कर रहे हैं कि आप गलत हो सकते हैं। अध्येता इस बात पर भी सतर्क हैं कि बहुत अधिक बौद्धिक विनम्रता रोजमर्रा की जिंदगी में किसी को पंगु न बना दे। बहुत से लोग कहते भी हैं कि मैं बौद्धिक रूप से विनम्र नहीं होना चाहता क्योंकि इसका मतलब है कि मैं आशाहीन होने जा रहा हूं। मैं चीजों पर कोई स्टैंड नहीं लूं। मगर शोध में अध्यायनकर्ताओं को ऐसा नहीं मिला। इसका कारण यह है कि बौद्धिक विनम्रता तीन चीजों पर आधारित होती है। एक तो यह कि मेरे पास वह सारी जानकारी नहीं है जो मुझे चाहिए। दूसरी संभावना यह कि मेरे पास बहुत सारी जानकारी है, लेकिन वह जानकारी इस तरह से पक्षपातपूर्ण हो सकती है कि मैं उसको नहीं मान सकता, और तीसरा यह कि शायद मेरे पास इसमें शामिल सभी साक्ष्यों को वास्तव में समझने की पृष्ठभूमि या क्षमता नहीं है। यह विश्वास की वैधता का एक बहुत ही तार्किक मूल्यांकन है। ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जिन पर हम इसलिए विश्वास करते हैं और मानते हैं क्योंकि किसी विशेषज्ञ ने हमें वैसा बताया है, इसलिए नहीं कि हमने वास्तव में उसका पता लगाया है। बौद्धिक रूप से विनम्र लोग अपनी जानकारी की वैधता की खोज में लगते हैं क्योंकि उन्हें सिर्फ इसलिए नहीं झुकना है क्योंकि कोई और कहता है कि आप गलत हैं। वास्तव में अन्य लोगों की बातों में नहीं आते हुए भी बौद्धिक रूप से पूरी तरह विनम्र हुआ जा सकता है। यह समझ हो जाना ही काफी है कि हमारे सोच की दुनिया वैसी है, क्योंकि यही हमें सिखाया गया है जो कि जरूरी नहीं कि सच हो।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

देवी-देवताओं की सवारियां

प्रो. अशोक कुमार

विभिन्न देवताओं की सवारियों के बारे में जानकारी कई धर्मों और संस्कृतियों में पाई जाती है। ये सवारी, देवता के स्वरूप, शक्तियों और गुणों को दर्शाती हैं। हालांकि, इनके बारे में कोई एकल, सर्वसम्मति से स्वीकृत तथ्य नहीं है, क्योंकि ये अक्सर धार्मिक ग्रंथों, लोककथाओं और कलाकृतियों की व्याख्या पर आधारित होते हैं।

कुछ प्रमुख देवताओं और उनके वाहनों के बारे में जानें:–

शिवजी का वाहन नंदी (बैल) है। नंदी धैर्य, शक्ति और स्थिरता का प्रतीक है। यह शिवजी के शांत और शक्तिशाली स्वभाव को दर्शाता है। विष्णु जी का वाहन गरुड़ है। गरुड़ एक पौराणिक पक्षी है जो ज्ञान, वीरता और निष्ठा का प्रतीक है। यह विष्णु जी के सर्वव्यापी और संरक्षक स्वभाव को दर्शाता है। दुर्गा माता की सवारी शेर है। शेर शक्ति, साहस और क्रोध का प्रतीक है। यह दुर्गा माता के रौद्र रूप को दर्शाता है। गणेश जी की सवारी चूहा है। चूहा बुद्धि, विवेक और बाधाओं को दूर करने की क्षमता का प्रतीक है। यह गणेश जी की बुद्धिमान और बाधाओं को दूर करने वाले स्वभाव को दर्शाता है। कार्तिकेय का वाहन मयूर है। मयूर सौंदर्य, गर्व और युद्ध का प्रतीक है। यह कार्तिकेय के युद्ध देवता होने के रूप को दर्शाता है। लक्ष्मी माता की सवारी उल्लू है। उल्लू ज्ञान और धन का प्रतीक है। यह लक्ष्मी माता के धन की देवी होने के रूप को दर्शाता है।

वाहनों का महत्व:–प्रत्येक वाहन देवता के स्वभाव और गुणों का प्रतीक है। वाहन देवताओं की पूजा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वाहनों को मूर्तियों, चित्रों और मंदिरों में व्यापक रूप से चित्रित किया जाता है।

क्यों विभिन्न देवताओं के अलग-अलग वाहन हैं? प्रत्येक देवता का एक विशिष्ट स्वभाव होता है, और उस स्वभाव को दर्शाने के लिए एक विशिष्ट वाहन चुना जाता है। प्रत्येक देवता की अलग-अलग शक्तियां होती हैं, और उन शक्तियों को दर्शाने के लिए एक विशिष्ट वाहन चुना जाता है।

कथाएं:– कई वाहनों से जुड़ी पौराणिक कथाएं हैं जो देवता और वाहन के बीच के संबंध को दर्शाती हैं। गणेश जी छोटे-से चूहे पर सवार होते हैं। आपके मन में भी यह ख्याल आया होगा कि आखिर गणेश जी ने मूषक को ही अपना वाहन क्यों बनाया। दरअसल भगवान गणेश द्वारा चूहे को अपना वाहन बनाने के पीछे कई पौराणिक कथाएं मिलती हैं। तो चलिए जानते हैं इसका कारण।

1. समुद्र मंथन की कथा :– जब देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया था, तब उसमें से कई रत्न निकले थे। इन रत्नों में से एक था हलाहल विष। यह विष इतना जहरीला था कि अगर कोई इसे पी लेता तो सारा संसार नष्ट हो जाता। तब भगवान शिव ने इस विष को पी लिया, लेकिन यह उनके गले में फंस गया। तब माता पार्वती ने गणेश जी को बुलाया और कहा कि वे जाकर भगवान शिव के गले से विष निकाल दें। गणेश जी ने तुरंत भगवान शिव के पास जाकर विष पी लिया, लेकिन उनकी गर्दन नीली पड़ गई। इसी दौरान एक चूहा गणेश जी के पैर पर चढ़ गया और विष को चाटने लगा। गणेश जी ने चूहे को रोकने की कोशिश की, लेकिन चूहा विष पी गया और मर गया। गणेश जी बहुत दुखी हुए और उन्होंने चूहे को पुनर्जीवित कर दिया। तब से चूहा गणेश जी की सवारी बन गया।

2. मुनि वामदेव ने दिया श्राप :–पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार इंद्र देव के दरबार में एक क्रौंच नामक गंधर्व था। जब इंद्र का दरबार चल रहा था, तो क्रौंच हंसी ठिठोली में लगा हुआ था, जिससे दरबार में बाधा उत्पन्न होने लगी। अपनी मस्ती में मस्त क्रौंच ने मुनि वामदेव के ऊपर पैर रख दिया। इससे मुनिदेव क्रोधित हो उठे और क्रौंच को चूहा बनने का श्राप दे दिया। चूहा बनने के बाद भी वह नहीं सुधरा और उसने पराशर ऋषि के आश्रम में बहुत उत्पात मचाया। चूहे के आतंक से परेशान होकर ऋषि, भगवान गणेश की शरण में पहुचे और उन्हें सारी बात बताई। तब भगवान गणेश ने उस उत्पाती चूहे को सबक सिखाने के लिए पाश फेंका, जिसमें वह फंस गया। इसके बाद वह गणेश जी से क्षमायाचना करने लगा, जिससे गणेश जी को उस पर दया आ गई और उसे अपना वाहन बना लिया।

3. गजमुख दानव और गणेश जी :–एक समय की बात है, एक बहुत बड़ा दानव था जिसका नाम गजमुख था। वह बहुत शक्तिशाली था और सभी देवताओं को परेशान करता था। सभी देवता गजमुख से डरते थे, लेकिन गणेश जी ने उसका सामना करने का निश्चय किया। एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें गणेश जी का एक दांत टूट गया, फिर गणेश जी को इतना गुस्सा आया और उन्होने गजमुख को पराजित कर दिया। गजमुख गणेश जी की शक्ति से बहुत प्रभावित हुआ और उनका भक्त बन गया। गणेश जी ने गजमुख को एक वरदान दिया कि वह हमेशा उनके साथ रहेगा। धीरे-धीरे, गजमुख का रूप बदलकर चूहे का हो गया और वह गणेश जी की सवारी बन गया।

भगवान गणेश द्वारा एक छोटे और दुर्बल जीव को वाहन बनाने के पीछे यह भी है कि गणेश जी कमजोर और दुर्बलों पर कृपा करते हैं। यही कारण है कि एक छोटे से चूहे पर कृपा कर उन्होंने उसे अपने वाहन के रूप में स्वीकार किया। साथ ही उसे इतना प्रबल बनाया कि वह गणेश जी का भार उठा सके। साथ ही गणेश जी का चूहे को वाहन बनाना इस बात का भी संकेत है कि संसार में कभी किसी को छोटा या तुच्छ नहीं समझना चाहिए, क्योंकि हर किसी की अपनी एक उपयोगिता और क्षमता है।

लक्ष्मी जी को धन की देवी माना जाता है और उल्लू को उनका वाहन माना जाता है। यह एक ऐसा संयोग है जो कई लोगों को आश्चर्यचकित करता है। आखिरकार, उल्लू को अक्सर बुराई और अंधकार से जोड़ा जाता है। तो फिर लक्ष्मी जी ने उल्लू को अपना वाहन क्यों चुना? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें एक पौराणिक कथा की ओर जाना होगा।

पौराणिक कथा:– एक बार माता लक्ष्मी पृथ्वी पर घूम रही थीं। वे एक ऐसे स्थान की तलाश में थीं जहां वे निवास कर सकें। उन्होंने चारों ओर देखा, लेकिन उन्हें कोई भी ऐसा पशु या पक्षी नहीं मिला जो उन्हें अपना वाहन बनने के लिए तैयार हो। तभी उन्होंने एक उल्लू को देखा। उल्लू अंधेरे में भी बहुत अच्छी तरह देख सकता था। वह बहुत ही बुद्धिमान और चालाक था। माता लक्ष्मी ने उल्लू से कहा, 'तुम मेरा वाहन बनोगे?' उल्लू ने तुरंत हां कर दी।

उल्लू को वाहन क्यों चुना?

उल्लू को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। माता लक्ष्मी ज्ञान और बुद्धि की देवी भी हैं। इसलिए उन्होंने उल्लू को अपना वाहन बनाकर ज्ञान और बुद्धि का प्रतीक बनाया। उल्लू अंधेरे में भी बहुत अच्छी तरह देख सकता है। यह उसकी दूरदर्शिता का प्रतीक है। माता लक्ष्मी भविष्य को देख सकती हैं। इसलिए उन्होंने उल्लू को अपना वाहन बनाकर दूरदर्शिता का प्रतीक बनाया। उल्लू शांत और एकांत स्थानों पर रहना पसंद करता है। यह शांति और एकांत का प्रतीक है। माता लक्ष्मी भी शांति और एकांत को पसंद करती हैं। इसलिए उन्होंने उल्लू को अपना वाहन बनाकर शांति और एकांत का प्रतीक बनाया।

आधुनिक दृष्टिकोण:– आज के समय में, उल्लू को बुराई और अंधकार से जोड़ना एक गलत धारणा है। उल्लू एक बहुत ही बुद्धिमान और सुंदर पक्षी है। माता लक्ष्मी ने उल्लू को अपना वाहन बनाकर यह संदेश दिया कि हमें हर चीज को उसके अच्छे और बुरे पहलुओं के साथ देखना चाहिए।

निष्कर्ष:– लक्ष्मी जी ने उल्लू को अपना वाहन इसलिए चुना क्योंकि उल्लू ज्ञान, दूरदर्शिता, शांति और एकांत का प्रतीक है। यह एक ऐसा संदेश है जो हमें आज भी प्रासंगिक लगता है।

दुर्गा माता की सवारी शेर क्यों है? : दुर्गा माता को शेर पर सवार दिखाया जाता है, इसके पीछे कई धार्मिक और प्रतीकात्मक कारण हैं। शेर को शक्ति, साहस और पराक्रम का प्रतीक माना जाता है। दुर्गा माता भी शक्ति की देवी हैं। शेर पर सवार होकर वे अपनी शक्ति और साहस को प्रदर्शित करती हैं। दुर्गा माता ने असुरों का वध किया था। शेर, एक शक्तिशाली जानवर होने के कारण, इस पौराणिक कथा में दुर्गा माता की शक्ति को दर्शाता है। शेर विजय का प्रतीक भी माना जाता है। दुर्गा माता का शेर पर सवार होना, बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है। प्राचीन काल में शेर को राजाओं का वाहन माना जाता था। दुर्गा माता को देवताओं की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है और इसीलिए उन्हें शेर पर सवार दिखाया जाता है।

कुछ अन्य कारण भी हैं:–

शेर की गति: शेर एक तेज गति वाला जानवर है। यह दुर्गा माता की गतिशीलता और तेजी को दर्शाता है।

शेर की दृष्टि: शेर की तीखी दृष्टि बुराई को पहचानने और उसका नाश करने की क्षमता को दर्शाती है।

निष्कर्ष:– दुर्गा माता का शेर पर सवार होना, उनकी शक्ति, साहस, विजय और राजसी स्वभाव को दर्शाता है। यह एक गहरा धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक है जो भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति गोरखपुर,
कानपुर विश्वविद्यालय

अजमेर डिस्कॉम ने 17 जिलों में अभियान चलाकर 1258 जगह बिजली चोरी पकड़ी

डिस्कॉम ने 2.75 करोड रुपए जुर्माना लगाया, 597 जगहों पर बिजली का गलत इस्तेमाल मिला

अजमेर, (कासं)। अजमेर विद्युत वितरण निगम ने डिस्कॉम के सभी 17 जिलों में बिजली चोरों के खिलाफ अभियान की शुरुआत इस माह से कर दी है। निगम द्वारा चलाए जा रहे बिजली चोरों के विरुद्ध अभियान के तहत डिस्कॉम टीम ने 8602 जगहों पर सतर्कता जांच की, इनमें 1258 जगहों पर बिजली चोरी पकड़ी गई, जिन पर 2 करोड़ 75 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। अभियान में 597 मामले विद्युत के गलत इस्तेमाल के दर्ज किए हैं, इन पर 99.85 लाख रुपयों का जुर्माना लगाया है।

अजमेर विद्युत वितरण निगम के प्रबन्ध निदेशक केपी वर्मा ने बताया कि डिस्कॉम ने बिजली चोरों को सबक सिखाने और राजकोष को घाटा पहुंचाने से रोकने के लिए बिजली चोरों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान में और अधिक तेजी लाई गई है। उन्होंने बताया कि डिस्कॉम ने इस साल 10 प्रतिशत से कम बिजली छीजत का लक्ष्य रखा है। इसके लिए अजमेर डिस्कॉम की विजिलेंस विंग को इस अभियान में और अधिक तेजी लाने के निर्देश दिए है।

■ डिस्कॉम द्वारा बिजली चोरों को सबक सिखाने और राजकोष को घाटा पहुंचाने से रोकने के लिए अभियान में और अधिक तेजी लाई गई है : वर्मा

जनसम्पर्क अधिकारी सतीश सोनी ने बताया कि डिस्कॉम की टीम में सबसे अधिक चित्तौडगढ़ जिले के अभियंताओं ने 188 विद्युत चोरी के मामले पकड़े जिन पर 39.53 लाख रुपए जुर्माना लगाया। इसके अतिरिक्त अजमेर सर्किल में 20, ब्यावर में 16, केकड़ी में 13, भीलवाड़ा में 116, शाहपुरा में 42, नागौर में 60, डीडवाना कुचामन में 99, झुंझनू में 186, सीकर में 147, नीम का थाना में 113, बांसवाड़ा में 76, डुंगरपुर में 59, प्रतापगढ़ में 56, राजसमंद में 12, उदयपुर में 49 व सलूम्बर सर्किल में 6 मामले विद्युत चोरी के पकड़े। सभी बिजली चोरों पर कुल 2 करोड़ 75 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है, इसके अतिरिक्त डिस्कॉम ने 597 जगह विद्युत के गलत इस्तेमाल के मामले दर्ज किए, जिसका 99.85 लाख रुपयों का जुर्माना लगाया गया।

गुलाब बाग को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल कराने की पहल

उदयपुर कलेक्टर पोसवाल ने जिला पर्यटन विकास समिति की बैठक ली

उदयपुर, (निसं)। जिला पर्यटन विकास समिति की बैठक मंगलवार को कलेक्ट्रेट मिनी सभागार में समिति अध्यक्ष और जिला कलेक्टर अरविन्द पोसवाल की अध्यक्षता में हुई। बैठक में शहर की ऐतिहासिक व प्राकृतिक धरोहर गुलाब बाग को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल कराने को लेकर प्रस्ताव करने का निर्णय लिया गया। जिला कलेक्टर ने नगर निगम और पर्यटन विभाग को संयुक्त रूप से प्रयास तेज करने के निर्देश दिए। इसके अलावा उदयपुर शहर के लिए ट्यूरिज्म मास्टर प्लान तैयार करने, शहर में एआई आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम लागू करने, सूचना केन्द्र के ओपन थियेटर को लोक कलाकारों की प्रस्तुति के लिए तैयार करने सहित पर्यटन विकास व पर्यटकों की सुविधाओं को लेकर सुझावों पर चर्चा भी की गई।

बैठक में नगर निगम आयुक्त रामप्रकाश, युडीए आयुक्त राहुल जैन, स्मार्ट सिटी लिमिटेड के एसीईओ कृष्णपालसिंह चौहान, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक माधुरी वर्मा, पीएचईडी अधीक्षण अभियंता अनिल गर्ग, परिवहन अधिकारी अनिल सोनी सहित अन्य अधिकारी, होटल एसोसिएशन व गाइड एसोसिएशन के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जिला कलेक्टर पोसवाल की पहल पर उदयपुर शहर के लिए ट्यूरिज्म मास्टर प्लान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम तैयार कराने का प्रस्ताव रखा। उपनिदेशक पर्यटन शिखा सक्सेना ने कहा कि ट्यूरिज्म मास्टर प्लान समय की मांग है, यदि उदयपुर में मास्टर प्लान तैयार किया जाता है तो यह प्रदेश का पहला जिला होगा। बैठक में एक निजी फर्म की ओर से मास्टर प्लान की आवश्यकता को लेकर तैयार पीपीटी का प्रजेंटेशन भी दिया। इसके अलावा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम को लेकर भी एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तुत की गई। जिला कलेक्टर ने शहर के किसी भी एक स्थल का चयन कर एआई आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम का पायलट प्रोजेक्ट तैयार करने के निर्देश दिए।

■ उदयपुर शहर के लिए ट्यूरिज्म मास्टर प्लान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम तैयार कराने का प्रस्ताव रखा

बैठक में कलेक्टर अरविन्द पोसवाल ने पर्यटकों के मनोरंजन के लिए शहर में विविध स्थलों पर लोक कलाकारों के माध्यम से सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बारे में जानकारी ली। पोसवाल ने सूचना केंद्र में बने ओपन थियेटर का जिक्र करते हुए कहा कि बहुत अच्छा स्थल है, यहां पहले फिल्म गाइड के गीत की शूटिंग भी हो चुकी है। यूडीए के माध्यम से विकास कार्य भी कराया गया है। उन्होंने ओपन थियेटर में पश्चिम सांस्कृतिक केंद्र व लोक कला मण्डल की तर्ज पर पर्यटकों के लिए नियमित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव देते हुए उसके लिए आवश्यक प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए। कलेक्टर की पहल पर पिछले वर्ष दीपावली पर शहर में की गई विद्युत सज्जा की सभी सदस्यों ने प्रशंसा करते हुए इस बार भी पहल को जारी रखने का आग्रह किया। इस पर जिला कलेक्टर ने आश्वस्त किया कि इस बार दीपावली पर नवाचार करते हुए आकर्षक विद्युत सज्जा कराई जाएगी। कलेक्टर पोसवाल ने पर्यटन सीजन के दौरान यातायात व्यवस्था को लेकर विशेष प्रयासों के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यातायात प्रबंधन को लेकर प्लानिंग की जाए। यातायात प्रभारी नेत्रपालसिंह ने बताया कि पर्यटन सीजन के दौरान शहर में अनुमानित रूप से 15 से 20 हजार अतिरिक्त वाहन आते हैं। यातायात नियंत्रण के लिए अतिरिक्त जाब्ते की दरकार रहेगी। जिला कलक्टर ने इस संबंध में पुलिस अधीक्षक से चर्चा कर आवश्यक व्यवस्था करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर पोसवाल ने नगर निगम और पर्यटन विभाग की ओर से पर्यटकों के लिए प्रस्तावित हेरिटेज वॉक को प्रमोट करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने पर्यटकों को लपकों की ओर से परेशान किए जाने की सूचना पर पर्यटन थाना प्रभारी कर्मवीरसिंह को लपकों के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस पर थाना प्रभारी ने नियमित रूप से की जा रही कार्यवाही से अवगत कराया। जिला कलेक्टर ने परिवहन विभाग को ऑटो रिक्शा चालक एसोसिएशन के साथ बैठक कर उनकी रेट रिवाइज कराकर मीटर का उपयोग सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। शहर के रात्रि के समय पर्यटकों के लिए भोजन आदि की समस्या के मद्देनजर शहर में कुछ स्थल चिन्हित करने तथा पुलिस अधीक्षक से चर्चा कर आवश्यक व्यवस्था करने की बात कही।

राशिफल

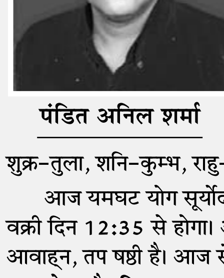

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 9 अक्टूबर, 2024

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र गुरूवार प्रात: 5:15 तक, सौभाग्य योग प्रात: 6:36 तक, तैतिल करण दिन 12:15 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से गुरूवार प्रात: 5:15 तक है। आज गुरू वक्री दिन 12:35 से होगा। आज छठ पूजन और मेला है। आज सरस्वती आवाहन, तप षष्ठी है। आज से जैन ओली आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:21 तक, शुभ 10:47 से 12:14 तक, चर 3:08 से 4:35 तक, लाभ 4:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:27, सूर्यास्त 6:01

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

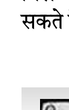

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मिथुन

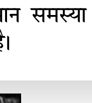

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

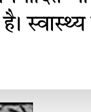

व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। मन का भय दूर होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

सिंह

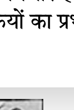

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

कन्या

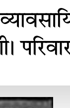

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

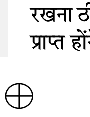

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

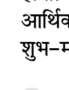

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

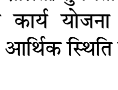

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

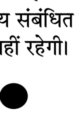

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में संतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ

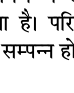

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

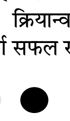

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।